

प्रतिभा कोई वरदान नहीं, एक जैविक और आध्यात्मिक विज्ञान है

युग की माँग और मानव शरीर में छिपी असीम सम्भावनाओं
का एक वैज्ञानिक और व्यावहारिक विश्लेषण।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

महानता आकाश से नहीं बरसती, यह अनुशासन की मुद्रा से खरीदी जाती है

प्रतिभा
आत्मबल
संकल्पबल



- प्रमाद और आलस्य का त्याग
- संकीर्ण स्वार्थपरता का अन्त
- सत्प्रयोजनों के लिए समर्पण

देवता भी तपस्वियों को ही वरदान देते हैं। बिना मूल्य चुकाए केवल मनौती माँगने से कुछ प्राप्त नहीं होता।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गावत्री परिवार के संस्थापक)

मानव उत्कर्ष का दो-तरफ़ा मोर्चा: एक साथ सृजन और ध्वंस



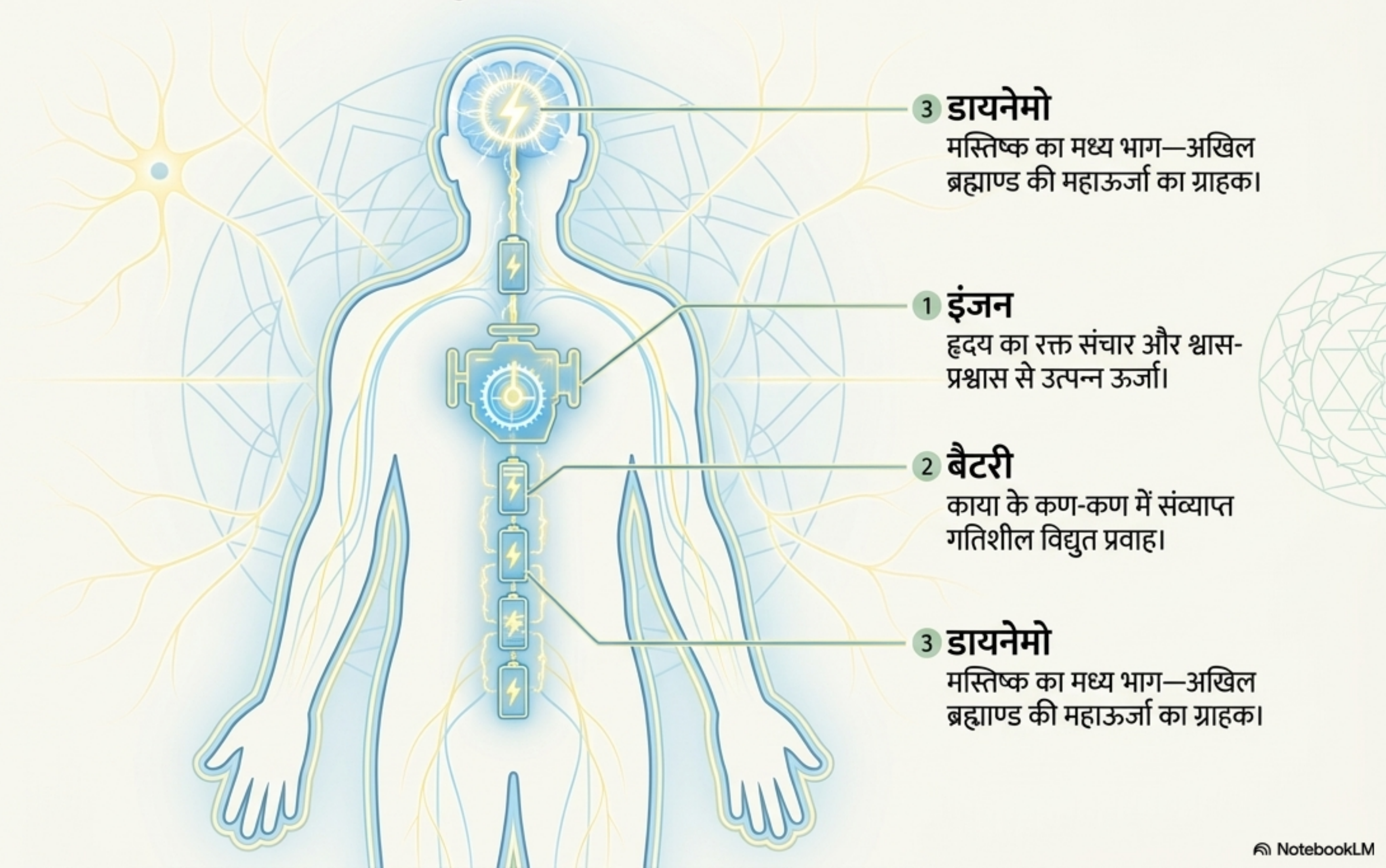
एक कदम शालीनता के सृजन काला एवं दूसरा अनीति के दमन का। यह दोधारी तलवार ही नवयुग का अवतरण सम्भव करती है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के शरीर ही हैं जिन्दा रहेगा र आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञानसे कहियेगा – सब बच्चों से कहिये मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोषिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा गदभूषिष्ठ श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

मानव शरीर केवल माँस का पुतला नहीं, एक असीम ऊर्जा का यंत्र है



3 डायनेमो

मस्तिष्क का मध्य भाग—अखिल ब्रह्माण्ड की महाऊर्जा का ग्राहक।

1 इंजन

हृदय का रक्त संचार और श्वास-प्रश्वास से उत्पन्न ऊर्जा।

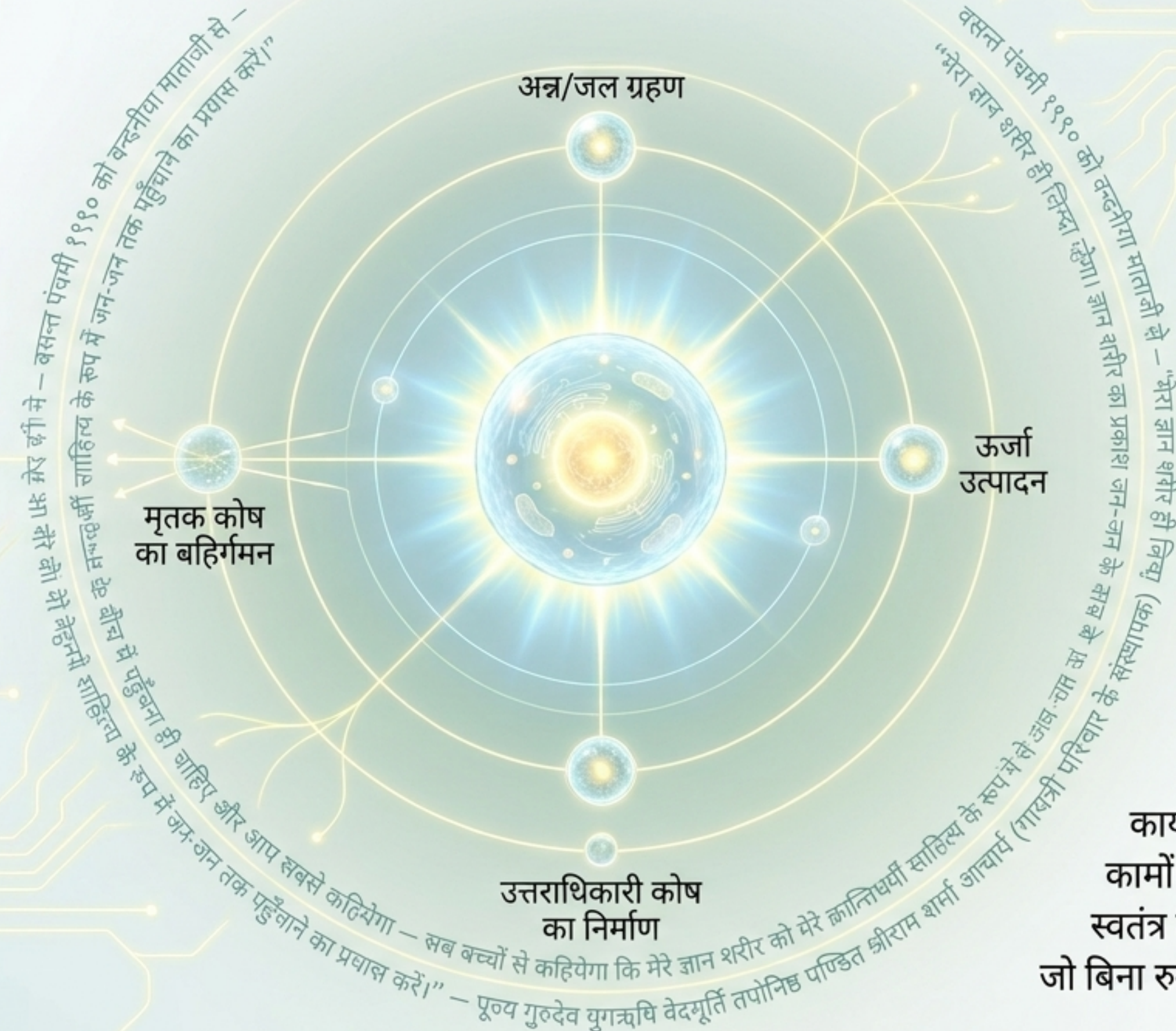
2 बैटरी

काया के कण-कण में संव्याप्त गतिशील विद्युत प्रवाह।

3 डायनेमो

मस्तिष्क का मध्य भाग—अखिल ब्रह्माण्ड की महाऊर्जा का ग्राहक।

अरबों जीवकोषों का ब्रह्माण्ड: हमारे भीतर एक निरंतर स्वचालित सौर मंडल



काया का प्रत्येक घटक, अपने-अपने कामों को मुस्तैदी से करता है। यह एक स्वतंत्र विश्व का उद्भव और व्यवस्था है, जो बिना रुके अनवरत रूप से काम करती है।

ब्रह्मरंध्र: एक महानगर को रोशन करने वाला जैविक पावर प्लांट

आकलनकर्ताओं के अनुसार, यदि शरीर के अंग-प्रत्यंगों की बिजली को एकत्रित किया जा सके, तो उसकी शक्ति मीलों लम्बे विशालकाय बिजलीघर के बराबर होगी।

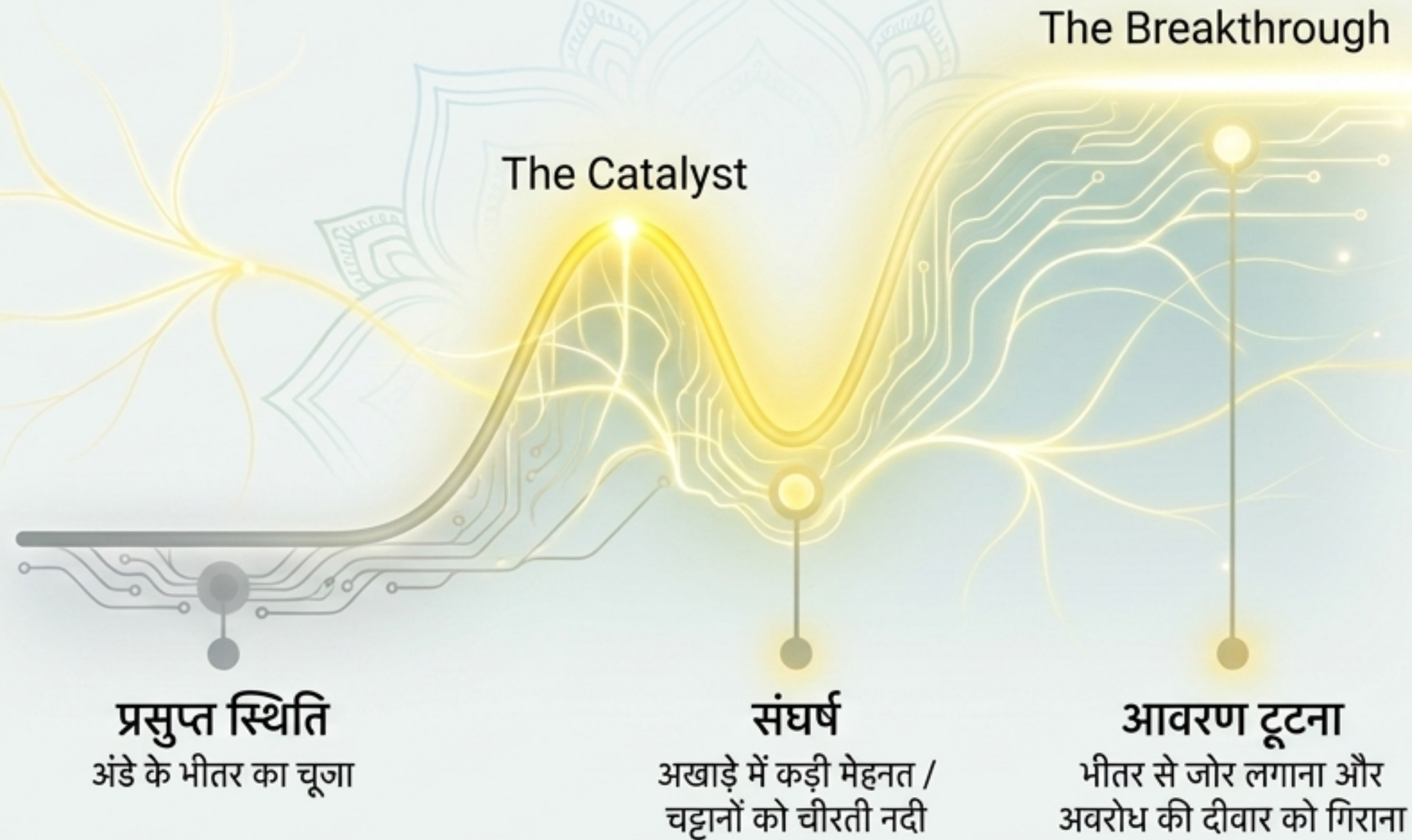
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव मुगकपि वेदपुर्ति तपोनिष्ठ पण्डित मीराम शर्मा आचार्य
(गावनी परिवार के संस्थापक)

क्षमता का अभिशाप: हम अपनी ऊर्जा का कितना अंश उपयोग कर रहे हैं?

	परजीवी (परावलम्बी सामान्य जन)	प्रतिभावान् (जाग्रत महाप्राण)
फेफड़े और मस्तिष्क	उथली साँस, एक छोटा अंश ही उपयोग में	संपूर्ण क्षमता का जाग्रत उपयोग
ऊर्जा की स्थिति	अधिकांश भाग निषिष्य, रोगविषाणुओं का घर	गरमी और संघर्ष से उत्पन्न अजेय शक्ति
कार्यशैली	दिन काटने और मौज-मजे की आदत	अपने और परिकर के सुनियोजन की क्षमता
प्रतिक्रिया	दूसरों के पीछे चलना	रेल के इंजन की तरह आगे बढ़कर खींचना

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

संघर्ष और गरमी: असीम क्षमताओं को जाग्रत करने का विज्ञान



वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा
रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही
चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे
ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

आराम-तलब शरीर में प्रतिभा मूर्च्छित पड़ी रहती है।
गरमी संघर्ष से उत्पन्न होती है, और हलचल व प्रगति उसी के सहारे बन पड़ती है।

प्रतिभा त्रिवेणी: शरीर, मन और आत्मा का वैज्ञानिक संलयन

वर्चस्

शालीनता और सदाशयता
पर सघन श्रद्धा।

ओजस्

संयम द्वारा शारीरिक स्वास्थ्य
और ऊर्जा की गारण्टी।

तेजस्

रुचि, एकाग्रता और तत्परता
से उत्पन्न कार्यकुशलता।

वलन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान
शरीर को मेरे क्रान्तिधर्यी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

ऊर्जा का सबसे बड़ा शत्रु: कामचोरी और आलस्य



आलस्य

यह एक ऐसी कुटेव है जो व्यक्ति को दिन-दिन अनुपयोगी, अक्षम और अशक्त बनाती है।



लकड़ी में लगे घुन की तरह

प्रतीत होता है कि हम मजे कर रहे हैं, पर वास्तव में प्रगति की समस्त सम्भावनाएँ दूर से ही नमस्कार करके लौट जाती हैं।

क्या आप पसीने की हर बूँद को मोती समझ रहे हैं?

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

व्यवस्था तंत्र: साधारण कार्यों से उत्कृष्ट नेतृत्व की यात्रा



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचनी प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहा सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे बच्चों रुहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्या के क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव गुगुक्कषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

२१वीं सदी का वसन्त: उत्कृष्टता के विकास का अनुकूल वातावरण

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि रूप में जन-जन तक पहुँचाने का सयास करें।”
– प्रबुध गुब्बेव मुगल्लवि वेठपूती तगोनिष्ठ पण्डित श्रीलन शर्मा आचार्य (गावडी परिवार के संस्थापक)

अन्धविश्वास, रूढ़ियाँ, मूढमान्यताएँ
अपनी मौत मरेगी।

नारी वर्ग की गरिमा, समता,
एकता, और आदर्शों के प्रति
साहस का सम्मान।

वसन्त का आगमन

वर्षा में बोया गया बीज सहज ही अंकुरित होता है।
यह नवयुग का अरुणोदय है, जहाँ प्रतिभाओं को उनकी क्रीड़ास्थली मिलेगी।

बादलों का विज्ञान: प्रतिभाओं द्वारा संसाधनों का चक्र

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुठदेव युगक्रान्ति वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

Phase 2:
उत्कृष्टता से जुड़ना
अहंकार शून्यता और
महाकाल का संकल्प।

Phase 1: विनम्रतापूर्वक संग्रहण
संसाधनों और ज्ञान को समेटना।

Phase 3: मखमली चादर बिछाना
समाज को बिना भेदभाव के सींचना।
हरीतिमा और उमंग का संचार।

प्रभा-मण्डल का निर्माण: अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता



व्यक्ति अपने प्रभामण्डल सम्पन्न क्षेत्र के साथ जुड़कर ही पूर्ण बनता है। अपने जैसे विचारों के घनिष्ठों को साथ लेकर बड़े कदम उठाना ही प्रगति की नीति है।

अलगाव से बचें—इतिहास गवाह है कि बड़े मोरचे जीतने के लिए सामूहिक शक्ति (दुर्गा का अवतरण) आवश्यक है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” – पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

महाकाल का निमंत्रण: अपनी जीव विज्ञान को अपनी नियति में बदलें



सत्य की शक्ति अजेय है। यह स्वतंत्र निर्णय का समय है कि हम महामानवों की पंक्ति में खड़े हों या साधारण पत्तों की तरह बह जाएँ।